येल और स्टैनफोर्ड की हकीकत

फ्रेंक ब्रुनी

© The New York Times 2019

अमेरिकी न्याय विभाग द्वारा नामचीन शिक्षा संस्थानों में प्रवेश के लिए वर्षों से चल रहे घोटाले के खिलाफ कार्रवाई शिक्षा तंत्र के भ्रष्टाचार का ही खुलासा करती है। ब्योरे बताते हैं कि धनी अभिभावकों ने प्रसिद्ध शिक्षा संस्थानों में बच्चों को प्रवेश दिलाने के लिए किस तरह पैसे खर्च किए और उन संस्थानों ने कैसे नियमों की धज्जियां उड़ाईं।

विश्वविद्यालयों में प्रवेश दिलाने के पागलपन के बारे में सबसे मनोरंजक कहानी हाल ही में मैंने एक कन्सल्टेंट से सुनी, जिसने येल और हार्वर्ड जैसे शिक्षा संस्थानों में अपने बच्चों को प्रवेश दिलाने की इच्छा रखने वाले अभिभावकों से भारी फीस ली। उस कन्सल्टेंट ने एक ऐसे माता-पिता की कहानी सुनाई, जिसने अपने बच्चे का लेख लिखवाने के लिए उसे बहुत अधिक पैसे दिए। कन्सल्टेंट ने उस बच्चे के संघर्ष की बेहद कारुणिक कहानी लेख में लिखी, जिसके आधार पर बच्चे को प्रवेश तो मिल गया। लेकिन कन्सल्टेंट की पीड़ा यह थी कि इतना शानदार लेख लिखने के बावजूद उसे उसका थोड़ा भी श्रेय नहीं मिला।

विगत मंगलवार को अमेरिकी न्याय विभाग ने दर्जनों समृद्ध अभिभावकों के खिलाफ, जिनमें एमी अवार्ड प्राप्त अभिनेत्री फेलिसिटी हफमैन भी हैं, अभियोगपत्र दायर करने की घोषणा की, जिन्होंने नामचीन शिक्षा संस्थानों में अपने बच्चों को प्रवेश दिलाने के लिए रिश्वत देने से लेकर धोखाधड़ी तक की। येल तथा स्टैनफोर्ड में अपने बच्चों के दाखिले के लिए कई अभिभावकों ने कोच को रिश्वत दी, ताकि वे

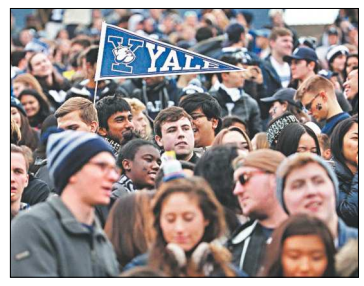

प्रशासन को झूठ कह सकें कि वे बच्चे उन खेलों में, जो उन्होंने कभी खेले ही नहीं, विलक्षण प्रतिभा संपन्न हैं। जबकि कुछ दूसरे अभिभावकों ने प्रवेश परीक्षा में अपने बच्चों की जगह किन्हीं होनहार बच्चों को बिठाने के लिए परीक्षा प्रबंधकों को रिश्वत दी। इस खुलासे ने धनी और ऊंची पहुंच वाले लोगों की करतूतें उजागर की हैं, लेकिन यह रहस्योद्घाटन हैरान नहीं करता। यह प्रसंग बताता है कि नामचीन शिक्षण संस्थाओं में प्रवेश पाने की गलाकाट प्रतिस्पर्धा कितनी गलत और अनुचित हो सकती है : लोग कितने-कितने तरीके से जुगाड़ बिठाते हैं, कितनी सारी योजनाएं तैयार की जाती हैं, पैसा कितनी बड़ी भूमिका अदा करता है, और विशेषाधिकार से कितने तरह के लाभ 'खरीदे' जा सकते हैं। इन सारी बातों का खुलासा तो अब जाकर हुआ है, जबकि सच्चाई यह है कि तालीम की तिजारत और पक्षपात ने बड़ी शिक्षण संस्थानों की प्रवेश प्रक्रिया को बहुत पहले से प्रदूषित और भ्रष्ट कर रखा है, जिसका सबसे अधिक नुकसान प्रतिभाशाली छात्रों को उठाना पड़ता है।

हार्वर्ड में आवेदन करते हुए 25 लाख डॉलर जमा करना वैधानिक है, जैसा कि जैरेड कुशनर के पिता ने किया, जबकि ऐसे ही संस्थानों में दाखिला दिलाने के लिए कोच को सैकड़ों हजार डॉलर रिश्वत देना गैरकानूनी, लेकिन इन दोनों मामलों में कितना फर्क है? दोनों ही मामलों में प्रतिभा और योग्यता पर पैसे को तरजीह दी गई। आपके बच्चे का पाठ सुधार देने और उसके लेख को तरतीब देने के लिए एक निजी कन्सल्टेंट को 50 हजार डॉलर देना कानूनी हो सकता है, जबकि प्रवेश के लिए आयोजित परीक्षा में अच्छे नंबर दिलाने के लिए परीक्षा प्रबंधक को रिश्वत देना गैरकानूनी, लेकिन क्या ये हथकंडे उन प्रतिभाशाली छात्रों के साथ धोखा और उनके भविष्य से खिलवाड़ नहीं हैं, जो नामी शिक्षण संस्थानों में प्रवेश पाने के लिए इतना पैसा खर्च नहीं कर सकते? इन तमाम उदाहरणों से बच्चों में क्या संदेश जाता है? यही कि नामचीन विश्वविद्यालयों में प्रवेश पाने के लिए आपका अपना प्रयत्न काफी नहीं है। आप अपनी कोशिशों से इसमें सफल हो भी नहीं सकते। आपके माता-पिता और काउंसिलर नियमों के बारे में ज्यादा जानते हैं, कि उन्हें कब और कैसे तोड़ा जा सकता है।

जैरेड कुशनर के मामले का खुलासा एक दशक से भी पहले डेनियल गोल्डन ने किया था। वर्ष 2006 में छपी उनकी किताब, *द प्रिंस ऑफ एडमिशन* बताती है कि समृद्ध लोगों ने नामचीन संस्थानों में अपने बच्चों को प्रवेश दिलाने के लिए किस तरह पैसे खर्च किए। गोल्डन ने बताया है कि हार्वर्ड में प्रवेश के लिए जरूरी योग्यता न होने के बावजूद जैरेड कुशनर को वहां दाखिला मिला। न्याय विभाग की हालिया सक्रियता के बाद मैंने डेनियल गोल्डन से बात की। उनका कहना था कि मैंने अपनी किताब में जो बातें बताई थीं, सच्चाई तो उनसे भी बहुत हैरान करने वाली निकली। उनकी उस किताब में एक अध्याय इस पर है कि किस तरह अलग-अलग खेल स्पर्धाओं ने अमीर बच्चों के दाखिले में मदद की। उन बच्चों को उन-उन खेलों में शानदार बताया गया था, जिनमें उन्होंने कभी भाग ही नहीं लिया था! न्याय विभाग ने जिन शिक्षा संस्थानों में प्रवेश के धंधे का खुलासा किया, उनमें वेक फॉरेस्ट, यूनिवर्सिटी ऑफ साउदर्न कैलिफोर्निया, जॉर्जटाउन, यूसीएलए और दूसरे कई प्रतिष्ठित संस्थान शामिल हैं। अदालत के दस्तावेजों के अनुसार, येल की महिला फुटबॉल टीम के प्रमुख कोच को भ्रष्टाचार के मामलों में एक साल पहले ही दोषी ठहराया गया था और इस दौरान उसने दूसरे दोषियों की पहचान कर संघीय अभियोजकों की मदद की।

इस खुलासे ने लोगों के दोहरेपन से भी पर्दा उठाया है। जिन अभिभावकों को दोषी पाया गया है, उनमें से अनेक लोग वर्षों से शिक्षा संस्थानों में सबके लिए समान अवसर की बात करते रहे हैं। हमारे देश के सर्वश्रेष्ठ शिक्षा संस्थानों के बारे में धारणा यह है कि वे सामाजिक गतिशीलता और युवाओं के सपने पूरे करने के इंजन हैं, लेकिन सच्चाई तो कुछ और निकली।

सुरेंद्र कुमार
पूर्व राजदूत

इस बार क्या मुमकिन है

पांच साल पहले 2014 के लोकसभा चुनाव में गुजरात के मुख्यमंत्री और भाजपा के प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार ने पूरे देश भर में घूमकर अपने तमाम विरोधियों की तुलना में सर्वाधिक चुनावी रैलियों को संबोधित किया था और किसी के मन में यह संदेह नहीं रहने दिया था कि वह खुद के नाम पर वोट मांग रहे हैं। यह इस नारे से भी एकदम स्पष्ट था : *अबकी बार मोदी सरकार*! सिर्फ एक बार किसी चूक की वजह से या फिर इरादतन भाजपा की वेबसाइट पर एक टैग लाइन नजर आई थी : *अबकी बार भाजपा सरकार*; जिसे कुछ घंटे बाद हटा दिया गया था। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के लाखों अनुशासित और समर्पित कार्यकर्ताओं ने देश भर में कठोर परिश्रम किया और भाजपा ने प्रेसिडेंशियल इलेक्शन की शैली में नरेंद्र दामोदार दास मोदी के लिए तकनीक का भरपूर उपयोग कर आक्रामक प्रचार किया था। भाजपा के स्पष्ट बहुमत हासिल करने से साबित हो गया कि उसकी रणनीति पूरी तरह से कारगर रही।

भाजपा यह चुनाव भी सिर्फ मोदी के करिश्मे और उनके पांच साल के कामकाज पर लड़ रही है, विपक्ष के पास उन्हें चुनौती देने का सिर्फ एक तरीका है कि भाजपा के खिलाफ वह साझा उम्मीदवार खड़ा करे, क्या ऐसा मुमकिन होगा?

कांग्रेस ने सबसे बुरी पराजय का सामना किया और इसके पीछे एक वजह यह भी थी कि उसने न तो अपने अच्छे कामों का ठीक से प्रचार किया और न ही उसने आगे बढ़कर जनहितैषी और परिवर्तनकारी पहलों का श्रेय लिया। हालांकि इस आकलन में कुछ सचाई का पुट है कि यदि कांग्रेस ऐसा करती, तब भी उसे भाजपा के अनथक प्रचार, कैग की बहुचर्चित नकारात्मक रिपोर्ट और सुप्रीम कोर्ट के अनेक फैसलों की वजह से मनमोहन सिंह की अगुआई वाली यूपीए-2 सरकार के बारे में जनता में बनी भ्रष्ट सरकार की धारणा के कारण पराजय का सामना करना ही पड़ता। उस समय ऐसा लग रहा था कि जटिल मुद्दों को लेकर उसे कुछ सूझ नहीं रहा है, वह एक संकट से उबरती नहीं थी कि दूसरा संकट सामने आ जाता था। उसके प्रधानमंत्री उस कप्तान की तरह थे, जिसका अपनी टीम पर नियंत्रण न हो! अगले महीने हो रहे लोकसभा चुनाव में भाजपा को ऐसी किसी स्थिति का सामना नहीं करना पड़ रहा है। नरेंद्र मोदी उसके मैच जिताऊ शुभंकर बने हुए हैं, अपनी वक्तृत्व कला के जरिये उनमें चुनाव प्रचार की दिशा तय करने की क्षमता है और वह अपनी सरकार द्वारा किए गए कार्यों का श्रेय लेने में पीछे नहीं रहते। चुनाव आयोग की घोषणा के बाद तमाम राष्ट्रीय अखबारों में सभी प्रमुख मंत्रालयों के महत्वपूर्ण फैसलों और परियोजनाओं को लेकर आंकड़ों सहित पूरे पेज के विज्ञापन छपे, जिनमें सबसे ऊपर प्रधानमंत्री की बड़ी-सी तस्वीर थी। जबकि कुछ महीने पहले ऐसे विज्ञापनों में प्रधानमंत्री की तस्वीर के साथ संबंधित मंत्रियों की छोटी तस्वीरें भी छपती थीं। आगामी चुनाव में भाजपा के चुनावी गणित में मंत्री मायने नहीं रखते; उसे भरोसा है कि वह सिर्फ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के प्रदर्शन और उनके करिश्मे से चुनाव जीत लेगी। और मोदी का इस बार का फॉर्मूला है, नामुमकिन भी अब मुमकिन है।

ऐसा लगता है कि वह राहुल गांधी के राफेल सौदे को लेकर किए जा रहे हमले, कि चौकीदार ही चोर है, और अन्य विपक्षी पार्टियों द्वारा कृषि संकट, बेरोजगारी और नोटबंदी के प्रभाव आदि को लेकर लगाए जा रहे आरोपों, अर्थव्यवस्था के खराब प्रदर्शन को लेकर बन रही सुर्खियों, एनपीए तथा विजय माल्या, नीरव मोदी और मेहुल चौकसी जैसे भगोड़ों को लेकर टीवी पर चल रही बहसों से बेफिक्र है।

मोदी मानते हैं कि अंतरिम बजट में किए गए प्रावधान, खासतौर से किसानों के खाते में सीधे छह हजार रुपये देने की घोषणा से उन्हें किसानों के वोट मिलेंगे और वेतनभोगी वर्ग कर में दी गई छूट से उनका समर्थन करेगा। उन्हें यह भी लगता है कि जनधन योजना, सौभाग्य, उज्ज्वला, आयुष्मान भारत, स्वच्छता अभियान और 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' जैसी सामाजिक रूप से समावेशी योजनाएं और कार्यक्रम वंचित और उपेक्षित तबकों के वोट भाजपा को दिलाएंगे।

कथित मिलीभगत और संस्थाओं और स्वतंत्र मीडिया घरानों पर हमले, विभाजनकारी नीतियों, उग्र हिंदुत्व समर्थकों की धमकियों, भीड़ की हिंसा, गोरक्षकों की धमकियों आदि को लेकर मीडिया में आ रही रिपोर्ट्स कोई गैरमुद्दे नहीं हैं। हालांकि इनसे उपजी नाराजगी या मायूसी उस तरह से मजबूत मोदी विरोधी लहर में तब्दील नहीं हो रही है, जैसा कि 1977 में इंदिरा गांधी के मामले में हुआ था।

राहुल गांधी खुद को आक्रामक नेता के रूप में प्रस्तुत करने में सफल जरूर हो रहे हैं, वह मोदी पर भ्रष्टाचार को लेकर वैसे ही आरोप लगाते हैं, जैसे विराट कोहली छक्के मारते थे! लेकिन राफेल में भ्रष्टाचार के आरोप क्या उन्हें ग्रामीण भारत के वोट दिलाएंगे? वास्तव में उन्हें कर्जमाफी के बजाय किसानों के लिए कुछ और आकर्षक आर्थिक पैकेज की पेशकश करनी चाहिए। उत्तर प्रदेश में सपा और बसपा, पश्चिम बंगाल में तृणमूल कांग्रेस और दिल्ली में आप के साथ कांग्रेस का गठबंधन न होने से भाजपा की संभावनाएं ही मजबूत हुई हैं। इसके अलावा बालाकोट में किए गए हवाई हमले और उसके बाद पाकिस्तान से उपजे तनाव का जिस तरह से सामना किया गया, उससे प्रधानमंत्री मोदी के पक्ष में मतों का रुझान बढ़ा है। राहुल को एहसास होना चाहिए कि भाजपा के खिलाफ साझा उम्मीदवार खड़ा करके ही मोदी को पराजित किया जा सकता है, वरना एक बार फिर मोदी सरकार।

मोदी बालाकोट के सहारे

पुलवामा-बालाकोट वास्तविक सवालों के जवाब नहीं हैं। इससे भय दूर होगा या नौकरी आएगी, या किसानों की हताशा खत्म होगी या एमएसएमई को नया जीवन मिलेगा या फिर माल्या, मोदी या चोकसी की वापसी होगी, या जम्मू-कश्मीर में शांति आएगी।

पी चिदंबरम
पूर्व केंद्रीय मंत्री

चुनाव आयोग ने रविवार 10 मार्च को चुनाव का बिगुल फूंक दिया। यह सरकार के पक्ष में उनका आखिरी कदम था। इस घोषणा से लोगों ने बड़ी राहत महसूस की क्योंकि अब कोई शिलान्यास नहीं होगा, न अध्यादेश आएगा और न ही खराब तरीके से तैयार की गई और जरूरत से कम वित्त पोषित योजनाओं की शुरुआत होगी। एक आकलन के मुताबिक प्रधानमंत्री ने 13 फरवरी को संसद का सत्र खत्म होने के बाद से 155 योजनाओं की या तो 'शुरुआत' की या फिर उनसे संबंधित 'शिलान्यास' किया। इस हास्यास्पद उदाहरण पर गौर करें। अहमदाबाद मेट्रो पर लंबे समय से काम चल रहा है, जिसकी शुरुआत 14 मार्च, 2015 को हुई थी। गुजरात सरकार ने वहां खुद का मजाक बना डाला। उसने इसके एक हिस्से को 'पूर्ण' करने और इसकी 'सेवा' की शुरुआत करने का फैसला किया। सो, 6.5 किलोमीटर लंबी मेट्रो लाइन का काम हड़बड़ी में पूरा किया गया। प्रधानमंत्री ने चार मार्च, 2019 को गर्व के साथ इसकी सेवा की शुरुआत की। कहानी यहां खत्म नहीं होती। वहां 6.5 किलोमीटर लंबा ट्रैक है और सिर्फ दो स्टेशन हैं, जबकि अन्य स्टेशन अभी निर्माणाधीन हैं। इसलिए वहां अभी जो ट्रेन चल रही है, वह प्रदर्शनी जैसी है, जिसका न कोई टिकट है न कोई भाड़ा, यानी मुफ्त का सफर!

हां कहें या ना

अब गंभीर मुद्दों की बात। 90 करोड़ वैध मतदाता नई सरकार चुनने के लिए वोट डालेंगे। मुख्य मुद्दा मोदी सरकार का प्रदर्शन है। कुछ सवाल एकदम मौजूं हैं:

1. क्या आप महसूस करते हैं कि आप एक स्वतंत्र देश के स्वतंत्र नागरिक हैं और आपको अपने धर्म या जाति या भाषा के आधार पर भीड़ की हिंसा, या घसीटे जाने या पीटे जाने या बहिष्कृत किए जाने या भेदभाव का शिकार होने को लेकर भय नहीं है? यदि आप महिला हैं, तो क्या उत्पीड़ित या छेड़छाड़ का शिकार होने को लेकर आपको भय लगता है?
2. क्या आप आश्वस्त हैं कि आपकी बातचीत या संदेशों की सरकार द्वारा जासूसी नहीं करवाई जाएगी?
3. क्या आप मानते हैं कि पिछले पांच वर्ष में वास्तव में बड़ी संख्या में नौकरियों का सृजन किया गया? यदि आप एक अभिभावक हैं, तो क्या आप आश्वस्त हैं कि आपके पुत्र या पुत्री को जल्द ही नौकरी मिल जाएगी? (सीएमआईई के मुताबिक फरवरी, 2019 के अंत तक 3.12 करोड़ लोग गंभीरता से नौकरी की तलाश कर रहे थे।)
4. यदि आप किसान हैं, तो क्या आप मानते हैं कि विगत पांच वर्षों में काफी सुधार हुआ है? क्या आपकी आय बढ़ी? क्या किसान के रूप में आप खुश हैं और अपने पुत्र/ पुत्री को किसान बनने के लिए प्रेरित करेंगे?
5. क्या आप मानते हैं कि विमुद्रीकरण (नोटबंदी) एक अच्छा विचार था? क्या आप मानते हैं कि नोटबंदी से आपको फायदा हुआ है? क्या आप मानते हैं कि नोटबंदी से देश की अर्थव्यवस्था को फायदा हुआ है?
6. क्या आप मानते हैं कि जीएसटी करों की विभिन्न दरों और एक महीने में तीन रिटर्न फाइल करने से सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्योगों को फायदा हुआ? क्या आप मानते हैं कि छोटे कारोबारियों के लिए जीएसटी कानून का पालन करना आसान है? क्या आप मानते हैं कि जीएसटी को जिस तरह से लागू किया गया उससे कारोबारी खुश हैं?
7. क्या मोदी सरकार ने चुनाव के अपने मुख्य वायदे पूरे किए- हर व्यक्ति के बैंक खाते में 15 लाख रुपये, हर वर्ष दो करोड़ रोजगार का सृजन, विदेश में जमा काले धन की वापसी, डॉलर की कीमत चालीस रुपये, आतंकवाद, खासतौर से जम्मू और कश्मीर में इसका खात्मा और सामान्य तौर पर भारत में अच्छे दिन आएंगे?
8. क्या आप मानते हैं कि मोदी सरकार के जम्मू और कश्मीर के प्रति शक्ति प्रदर्शन, सैन्यवादी और बहुलतावादी दृष्टिकोण से राज्य खासतौर से कश्मीर घाटी में हिंसा खत्म होगी और शांति की स्थापना होगी?

श्रीमान मोदी और उनके मित्र

9. क्या आप मानते हैं कि विजय माल्या, नीरव मोदी और मेहुल चोकसी सरकार की बिना जानकारी के भारत से भाग गए?
10. क्या आप मानते हैं कि मोदी सरकार द्वारा तय किया गया राफेल सौदा साफ-सुथरा है और इसमें एचएएल की कीमत पर किसी निजी कंपनी को लाभ नहीं पहुंचाया गया? क्या आप मानते हैं कि राफेल सौदे में कीमत, विमानों की संख्या कम करने, छूट देने, आपूर्ति के समय और ऑफसेट पार्टनर के चयन आदि जैसे बिंदुओं की जांच करने की कोई जरूरत नहीं है?
11. क्या आप मानते हैं कि सीबीआई, प्रवर्तन निदेशालय, आयकर विभाग जैसी प्रमुख जांच एजेंसियां निष्पक्ष और स्वतंत्र हैं?
12. क्या अहमदाबाद, गुवाहाटी, जयपुर, लखनऊ, मंगलुरू और तिरुवनंतपुरम जैसे छह हवाई अड्डों के निजीकरण के ठेके गुजरात के एक व्यवसायी घराने को देना उचित है? क्या आप इसे सामान्य फैसला मानते हैं?

उन्माद या समझदारी

इन सवालों में वास्तविक मुद्दे निहित हैं, जिनका सामना देश कर रहा है। यदि आप एक नागरिक के रूप में इन वास्तविक मुद्दों को लेकर चिंतित हैं, तो मैं आपसे आग्रह करूंगा कि आप इन सवालों का जवाब दें। आप हां या ना कह सकते हैं, लेकिन आप इन सवालों को नजरंदाज नहीं कर सकते। मोदी सरकार की आखिरी उम्मीद यही होगी कि आप इन सवालों को नजरंदाज कर दें या फिर किसी भी तरह से पाकिस्तान के बालाकोट में भारतीय वायुसेना की कार्रवाई के बाद उभरे राष्ट्रवाद के 'जोश'में ये सवाल दब जाएं।

भारतीय वायु सेना पूरे देश की है और उस पर प्रत्येक भारतीय को गर्व है। पुलवामा सरकार की नाकामी थी, बालाकोट भारतीय वायुसेना की सफलता है, अगले दिन पाकिस्तान की ओर से की गई कार्रवाई सरकार की एक और नाकामी थी।

पुलवामा-बालाकोट ऊपर दिए गए किसी भी सवाल का जवाब नहीं हैं। इससे क्या भय दूर होगा या नौकरी आएगी, या किसानों की हताशा खत्म होगी या एमएसएमई को नया जीवन मिलेगा या फिर माल्या, या मोदी या चोकसी की वापसी होगी या जांच एजेंसियों पर अंकुश लगेगा या कश्मीर घाटी में शांति स्थापित होगी।

नरेंद्र मोदी के चुनावी भाषण बालाकोट में भारतीय वायुसेना की कार्रवाई पर केंद्रित हैं और वे मतदाताओं को उद्वेलित करना चाहते हैं।

वह उम्मीद कर रहे हैं कि बालाकोट उन्हें विजय दिलाएगा। मैं यह मानता हूं कि भारत के लोग समझदार हैं।

हो मुबारक मंजरी फूलों भरी

कुमाऊं में बैठी होली गायन की परंपरा ढाई सौ से तीन सौ साल पुरानी है। राजदरबार से निकलकर होली गायन की यह परंपरा आम लोगों तक पहुंची। इसमें ब्रज और अवध के इलाकों की छाप है, पर पहाड़ की पहचान भी इसमें साफ सुनाई पड़ती है।

संगीत और गायन की दृष्टि से उत्तराखंड में कुमाऊं अंचल की होली विशिष्ट रही है। गांव की चौपाल से लेकर घर-आंगन में गाई जाने वाली पहाड़ की यह होली स्थानीय संस्कृति, सामाजिक सहभागिता और समरसता की प्रतीक है। सामान्यतः यहां होली गायन की दो परंपरागत विधाएं दिखाई देती हैं। पहली विधा खड़ी होली है, जो ग्रामीण परिवेश के अत्यंत निकट है। इस होली में आम जन की भागीदारी प्रमुखता से रहती है। इसका गायन फाल्गुन एकादशी से शुरू होकर पूर्णिमा के अगले दिन छलड़ी तक चलता है। इस होली में होल्यार गोल घेरे में घूमते हुए ढोल और मजीरे की ताल में होली गाते हैं। कुमाऊं में होली गायन की दूसरी विधा बैठी होली के रूप में प्रचलित है। शहरी परिवेश में इस होली का गायन सर्वाधिक दिखाई देता है, जिस वजह से यह नागर होली के नाम से भी जानी जाती है। बैठी होली का गायन देवस्थान, सार्वजनिक भवन अथवा घर में बैठकर किया जाता है, जिसमें पांच-सात अथवा उससे अधिक लोग शामिल होते हैं। इसके गायन की शुरुआत पूस महीने के पहले रविवार से हो जाती है। पूस से लेकर वसंत पंचमी के पहले दिन तक आध्यात्मिक/निर्वाण होली गीतों का गायन होता है, उसके बाद शिवरात्रि तक रंग भरी और इसके बाद छलड़ी तक शृंगारिक होली गीत गाए जाते हैं।

चंद्रशेखर तिवारी
रिसर्च एसोशिएट, दून लाइब्रेरी

बैठी होली गायन की शुरुआत कुमाऊं में कब से हुई, इसका लिखित प्रमाण तो नहीं मिलता, परंतु प्रचलित लोक मान्यता के आधार पर 250 से 300 साल पहले इसकी शुरुआत हुई। विद्वानों का मानना है कि चंद राजाओं के शासन के दौरान कुमाऊं क्षेत्र में बैठी होली गायन की परंपरा चलन में थी। गढ़वाल के तत्कालीन राजा प्रद्युम्न शाह (1786-1803) से संबंधित एक पंक्ति इस तरह है, *तुम राजा महराज प्रद्युम्नशाह, मेरि करो प्रतिपाल, लाल होली खेल रहे हैं...*। चर्चित कवि गुमानी पंत (1790-1846) द्वारा रचित इस होली गीत के आधार पर भी माना जा सकता है कि कुमाऊं में बैठी होली का इतिहास कम से कम ढाई सौ वर्ष पुराना अवश्य ही रहा है, *मोहन मन लीनो, मुरली नागिन सौं/केहि विधि फाग रचायो/बृज बावरो बावरी कहत है अब हम जानी/बावरो भयो नंदलाल केहि विधि फाग रचायो/कहत 'गुमानी' अंत तेरो नहीं पायो/केहि विधि फाग रचायो।*

उस दौर में राजदरबार की बैठकों में अन्य जगहों से कई पेशेवर गायक आते थे। इन गायकों की संगति में रहकर कुमाऊं के स्थानीय लोग भी गायन विधा में पारंगत होने लगे। इस तरह बैठी होली की परंपरा ने बाद में राज दरबार से निकलकर आम लोगों के बीच अपना स्थान बना लिया। अनुमान किया जाता है कि 19 वीं सदी के प्रारंभ में बैठी होली राजदरबार से समाज के संभ्रांत और आम जनों के बीच पहुंची। अल्मोड़ा में मल्ली बाजार के हनुमान मंदिर से इसकी शुरुआत मानी जाती है। उस दौर में होली के रसिक स्व. गांगी लाल वर्मा के आवास पर भी होली की बैठकें होती थीं, जहां स्थानीय लोगों को विख्यात गायिका रामप्यारी को सुनने का अवसर मिलता था। अल्मोड़ा की परंपरागत बैठी होली को संवारने में कई मुस्लिम गायकों का भी योगदान रहा है, जिनमें उस्ताद अमानत हुसैन का नाम आज भी आदर के साथ लिया जाता है। फिलहाल इस समृद्ध विरासत को अल्मोड़ा की प्रसिद्ध सांस्कृतिक संस्था 'हुक्का क्लब' आगे बढ़ाने का प्रयास कर रही है। यहां पूस के पहले इतवार से होने वाली बैठकों में रसिक जन होली गायन का आनंद उठाते हैं। नैनीताल और हल्द्वानी में भी कुछ संस्थाएं हर साल बैठी होली का आयोजन करती हैं।

कुमाऊं की बैठी होली में प्रेम, वियोग और शृंगारिक गीतों की प्रधानता तो रहती ही है, इनमें जनमानस को भक्ति, धर्म, दर्शन और वैराग्य का संदेश देने वाली होलियां भी शामिल रहती हैं। बैठी होली के गीतों में ब्रज और अवध इलाके की छाप है, लेकिन इनमें पहाड़ की महक साफ महसूस की जा सकती है। इसके शास्त्रीय बंधनों से युक्त होने के बाद भी यहां के समाज ने होली गायकों को गायन में शिथिलता दी है। रागों से अनजान गायक भी मुख्य गायक के स्वर में अपना सुर आसानी से मिला लेते हैं। लंबे समय तक गाए जाने के कारण भी यह खास है।

बैठी होली में समय, दिन और पर्व विशेष का विशेष ध्यान रखा जाता है और इसी आधार पर निर्वाण, भक्ति तथा शृंगार-वियोग प्रधान होलियों को अलग-अलग राग और रूपों में गाने की परंपरा है। इसकी शुरुआत राग श्याम कल्याण या काफी से की जाती है, फिर सिलसिलेवार राग जंगला-काफी, खमाज, सहाना, झिंझोटी, विहाग, देश, जयजयवंती, परज तथा भैरव में इसका गायन किया जाता है। दिन में होने वाली बैठकों में राग पीलू, सारंग, भीमपलासी, मारवा, मुल्तानी, भूपाली आदि रागों पर आधारित होलियां गाई जाती हैं।

बैठी होली की गायन शैली श्रुत परंपरा से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक चलती आई है। इसी कारण इन गीतों में सुर देते हुए एक सामान्य आदमी भी गायक बन जाता है। बैठी होली की बैठकों में गुड़ की डली, पान-सुपारी, लौंग-इलायची के साथ ही पहाड़ी व्यंजनों में शुमार चटपटे आलू के गुटके और सूजी से बने स्वादिष्ट सिंगल परोसने का भी रिवाज है। बैठी होली के समापन आशीष के इस आखर के साथ होता है, *जुग-जुग जीवें मित्र हमारे/बरस-बरस खेलें होली/हो मुबारक मंजरी फूलों भरी/ऐसी होली खेलें जनाब अली।*